आरती श्रीमूळलिंगाची ७६

जय देव जय देव जय मूळलिंगा। हरमूळलिंगा। मां पाहि मां पाहि दुस्तर भवभंगा।।धु.।। आदि अनादि अंती सर्वांतर्यामी। गौरीवर गंगाधर दिनवत्सलनामी।।१।। त्रिगुणतीत त्रिपुरांतक त्रितापहारी। संकट पडल्या स्मरतां त्वरितचि निवारी।।२।। अक्षय अखंड अरूप न मिळे वेदांसी। माणिक मायाहारक प्रेमपूरनिवासी।।३।।